पपीता

फल का नाम : पपीता
वैज्ञानिक नाम : कैरीका पपाया
परिवार : कैरीकेसी
रोपण दिनांक: 04/08/2023
दूरी/अंतर : 8 x 7 फीट पौधे से पौधे की दूरी और लाइन से लाइन की दूरी
रोपण क्षेत्र: 26.5 R
पौधों की संख्या : 377

किस्में : ताइवान 786/रेड लेडी, 15 नंबर, रेड बेबी, वेलकम-46, आइस बेरी, ग्रीन बेरी, रूबी रेड

पपीता की विशेषताएँ : पपीता एक मीठा पौष्टिक फल है, विटामिन ए (2020 आईयू/100 ग्राम), विटामिन सी (85 मिलीग्राम/100 ग्राम), प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट का समृद्ध स्त्रोत है, पपीता को पिछले आंगन के फल के रूप में जाना जाता है। पपीता उत्पादन में भारत देश सबसे अग्रणी है। पपीता एक बहुलिंगी पोधा है जिसमे नर, मादा एवं द्विलिंगी पोधे पाये जाते है |

ताइवान 786 किस्म की विशेषताएँ : ताइवान 786 अधिक उपज देने वाली और मीठी किस्म है, इसका छिलका मोटा होता है, एवं इसकी अच्छी गुणवत्ता के कारण इसे लंबे बाजार के लिए पसंद किया जाता है, यह वायरस के प्रति संवेदनशील है।

उपयुक्त मृदा: पपीते की खेती के लिए 6.5-7.0 पीएच वाली जलोढ़ मध्यम काली, अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ, कार्बनिक पदार्थ से भरपूर मिट्टी सबसे उपयुक्त है। जल जमाव वाली मिट्टी का चयन बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।

जलवायु: पपीता को मुख्य रूप से उष्ण एवं उपोष्ण जलवायू वाले भागो मे उगाया जाता है, पपया एक दिन तटस्थ और थर्मोसेंसेटीव पौधा है। विकास के लिए 22-26° C डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। फूल आने के दौरान उच्च तापमान बाँझपन का कारण बनता है। थंड, जल जमाव और तेज़ हवा के प्रति संवेदनशील है। उपयुक्त वार्षिक वर्षा 150-180 सेमी तक होणी चाहिये ।

उत्पादन: रोपण के 7-8 महीने बाद उत्पादन शुरू होता है, औसत उत्पादन 40 किग्रा/पौधा प्राप्त होता है।

प्रमुख कीट : मिली बग, फल मक्खी, थ्रिप्स, एफिड, लाल मकड़ी घुन, सफेद मक्खी

प्रमुख रोग : लीफ कर्ल वायरस, पपीता मोज़ेक वायरस, रिंग स्पॉट वायरस, जड़ सड़न, तना सड़न, चूर्णिता फफुंद, मृदुरोमिल फफुंद।